Hin2B11a Histoire culturelle de l'aire hindoustani

Cours 9 : उर्दू शायर और उनकी शायरी

उर्दू – एक परिचय ज़बान–ए–उर्दू–ए–मुअल्ला हिन्दवी रेखटा

दक्षिण भारत में उर्दू का इस्तमाल दक्खिनी मुहम्मद कुली कुतुब शाह(m.1613)

मुगल सलतनत का पतन (déclin) दिल्ली में हालात नादिर शाह(1739), अहमद शाह अबदली(1757)

स्थानीय राज्यों का उभरना (émerger): अवध – लखनऊ नवाबों के दरबार में उर्दू शायरी

मसनवी क़सीदा गज़ल रुबाई शेर क़िता मरसिया

उस ज़माने के चन्द अहम शायरों पर नज़र : शहर अशोब

मोहम्मद रफ़ी सौदा (1706 ? 1713 ?-1781) ख़्वाजा मीर दर्द (1721–1785) मीर ताक़ी मीर (1722–1810)

दिल्ली में फिर उर्दू शायरी का पनपना : बहादुर शाह ज़फ़र (1775–1862) मिरज़ा ग़ालिब (1797–1869)

न किसी की आंख का नूर हूं न किसी के दिल का क़रार हूं
जो किसी के काम न आ सके मैं वह एक मुश्त–ए–गुबार हूं
न तो मैं किसी का हबीब हूं न तो मैं किसी का रक़ीब हूं
जो बिगड़ गया वह नसीब हूं जो उजड़ गया वह दयार हूं
मेरा रंग रूप बिगड़ गया मेरा यार मुझसे बिछड़ गया
जो चमन फ़िज़ां में उजड़ गया मैं उसकी फ़स्ल–ए–बहार हूं
पये फ़ातेहा कोई आए क्यों कोई चार फूल चढ़ाए क्यों
कोई आके शम्मा जलाए क्यों मैं वह बेकसी का मज़ार हूं
मैं नहीं हूं नग़मा–ए–जांफ़िशां मुझे सुनके कोई करेगा क्या
मैं बड़े बरोग की हूं सदा मैं बड़े दुख की पुकार हूं

लगता नहीं है जी मेरा उज़ड़े दयार में किसकी बनी है आलम–ए–नापाएदार में
कह दो इन हसरतों से कहीं और जा बसें इतनी जगह कहां है दिल–ए–दाग़दार में
उम्र–ए–दराज़ मांगकर लाए थे चार दिन दो आरज़ू में कट गए दो इंतज़ार में
कितना है बदनसीब ज़फ़र दफ़्न के लिए दो गज़ ज़मीन भी न मिली कू–ए–यार में